महामति प्राणनाथ की महाजागनी के नये चरण

प्रो० माताबदल जायसवाल

एम० ए०, डी० लिट० इलाहाबाद

महामति प्राणनाथ का आविर्भाव औरंगजेब कालीन भारत में उस समय हुआ था जिस समय देश में आर्थिक राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक संघर्ष एवं विषमता थी। धर्म के क्षेत्र में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, बौद्ध जैन अपनी अपनी संकीर्ण साम्प्रदायिकता के दलदल में फँसे थे। सामाजिक क्षेत्र में हिन्दुओं में जाति-पाति, छुआ छूत, ऊँच नीच के विचारों से विकेन्द्रिकरण की प्रवृतियाँ इस समाज को टुकड़े-टुकड़े में बांट रही थीं। धर्म के क्षेत्र में हिन्दू, मुसलमान, बौद्ध, जैन, सभी में कर्म काण्ड या शारियत का ही राज्य था।

आवश्यकता थी एक ऐसी विराट समन्वयात्मक व्यक्तित्व की जो सारी विषमताओ से ऊपर उठ-कर सबका समन्वय कर सके। महामति प्राणनाथ ने अपने विराट समन्वयात्मक व्यक्तित्व से इसी ऐतिहासिक अभाव की पूर्ति की। मध्यकाल के सभी धार्मिक नेताओं से अत्यधिक व्यापक एवं प्रगति-शील विचारक दार्शनिक तथा अत्यधिक समन्वया-त्मक व्यक्तित्व लेकर अवतरित हुए थे। महामति ने सर्व धर्म समभाव सर्वजाति समभाव, सर्व भाषा समभाव, के महान आदर्श को सत्रहवीं शताब्दी में प्रचारित किया।

सभी उपास्यों (कृष्ण, ईसा, मुहम्मद, बुद्ध की भौतिक एकता या समानता) सभी धर्मग्रन्थों (वेद, उपनिषद, गीता, भागवत, कुरान, बाइबल) की भौतिक एकता सभी जातियों हिन्दू (ब्राह्मण, क्षत्री वैश्य, शूद्र) मुसलिम ईसाई सब की समानता तथा देश की भाषाई एकता तथा प्रादेशिक एकता साथ साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा भारत राष्ट्र की एकता जिस महान आदर्श का संदेश इन्होंने सत्रा-हवीं शती में दिया वह आज बीसवीं शती के लिये भी संगतिशील है और सम सामयिक संदर्भ में उपयोगी है।

महामति प्राणनाथजी के इतने अधिक व्यापक एवं समन्वयात्मक दृष्टिकोण इतने अधिक उदार-वादी धार्मिक दृष्ठिकोण के होने पर उनका उपदेश ३०० वर्षो में भी जन-जन तक न पहुँच सका। खेद की बात है कि सत्तर करोड़ की आबादी वाले भारत में भो लगभग ७ लाख व्यक्ति ही प्राणनाथ के प्रणामी धर्म के अनुयायी हैं और उन्हे जानने वाले १० लाख व्यक्ति होंगे।

आज भारत को स्वतन्त्र हुए ३७ वर्ष हो गये किन्तु आज भी हम संकीर्ण साम्प्रदायिकता, संकीर्ण प्रान्तीयता, संकीर्ण भाषावाद के रूढिग्रस्त विचारों के दलदल में फँसे हैं। महामति प्राणनाथ के व्यापक आदर्शों पर चलकर राष्ट्रपिता गाँधी ने भारत को राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, भाषिक एकता प्रदान करने का अथक प्रयास किया किन्तु महात्मा

Nijanand App

गाँधी के दिवंगत होते ही इन सारे क्षेत्रों में विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्तियाँ प्रबल हो चलीं हैं और भारत को चतुर्दिक कमजोर करने में लगी हैं। इसलिए आवश्यकता है कि महामति प्राणनाथ के आदर्शों, उददेशों को जन-जन तक पहुँचाया जाए।

प्रश्न है कि प्राणनाथ जी के उपदेश, उनके आदर्श मात्र सारे देशों में जनता के पास कैसे पहुँच सकते हैं ? महामति प्राणनाथ के उपदेशों का प्रचार अभी तक देश में प्रणामी धर्म से संबन्धित प्रणामी मन्दिरों के द्वारा हो रहा हैं। प्रणामी मन्दिरों के द्वारा प्रणामी धर्म अथवा महामति के समन्वयात्मक महापथ का प्रचार प्रसार बहुत व्यापक रूप से सम्भव नहीं। प्रणामी मन्दिरों में जो धार्मिक उत्सवों में जो जलसे होते हैं कुलजम स्वरूप के जो १०८ परायण या १००८ परायण होते हैं उनमें केवल प्रणामी सुन्दरसाथ ही भाग लेते हैं। दर्शक के रूप में गैर प्रणामी लोग भी कभी-कभी आ जाते हैं। इन जलसों का कोई भी स्थायी प्रभाव भारत के विशाल जन समुदाय में नहीं पड़ता है। इसलिए विवश होकर हमको सोचना पड़ता है कि महामति के उपदेशों के प्रचार प्रसार का कोई नया माध्यम ढूँढा जाए।

उन्नीसवीं शताब्दी भारत के लिए पुनर्जागरण शताब्दी कही जाती है। इस युग में ब्रह्म समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन, थीयोसाफिकल सोसाइटी का आविर्भाव और विकास हुआ। इन संस्थाओं के संस्थापक राजाराम मोहनराय, दयानन्द, विवेकानन्द, एनी बिसेन्ट आदि समाज सुधारक एवं धर्म सुधारकों ने आधुनिक भारत का निर्माण किया।

इन सबने अपने आदर्शों का प्रचार करने के लिए आधुनिक माध्यम निकाला और वह आधुनिक माध्यम था शिक्षा जगत में इन धर्म सुधारकों के उपदेशों का प्रचार प्रसार। आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसाफिकल सोसाइटी द्वारा जन-जन में प्रत्येक छात्र में इन लोगों का व्यापक प्रचार है।

इन संस्थाओं के द्वारा देश की प्रगति में महत्व पूर्ण योगदान हुआ है किन्तु ये सारी संस्थाएँ एक ही धर्म या सम्प्रदाय से संबन्धित हैं अतएव इन संस्थाओं में शिक्षित छात्र विश्व धर्म विश्व जागनी विश्व नैतिकता के आदर्श को जीवन में नहीं उतार पाता है क्योंकि ये सभी धर्म केवल अपने धर्म का प्रचार प्रसार करते हैं यही सोचकर महामति प्राणनाथ के नाम से देश के कोने-कोने में हाई स्कूल, इन्टर कालेज, डिग्री कालेज, विश्वविद्यालय खोलने का विचार किया गया है।

हमारा सर्वप्रथम आरम्भ इलाहाबाद, चित्रकूट के मध्य मऊ जनपद में "महामति प्राणनाथ महाविद्यालय" मऊ (बाँदा) में खोलने का आयोजन हो रहा है।

इस महाविद्यालय में बी. ए. की उपाधि दी जाएगी जो बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त होगी। साथ ही इसमें महामति प्राणनाथ के कुलजम स्वरूप को आधार मानकर विश्व के सभी धर्म एवं धर्म ग्रन्थों से विद्यार्थियों को परिचित कराया जायेगा।

अखिल भारतीय स्तर पर एक महामति प्राणनाथ एजुकेशनल ट्रस्ट खोलने का विचार है जिसके तत्वावधान में प्रत्येक नगर प्रत्येक प्रदेश में ऐसे कालेज खोल सके। हम सभी प्रणामियों से इस विषय में सुझाव चाहते हैं।

Nijanand App